आर्यसमाज नीदरलैण्ड (ASAN)

लगभग ४५ वर्षों से हॉलैण्ड में आर्यसमाज सक्रिय है, जिसमें सूरीनाम देश के भारतवंशी हजारों की संख्या में "सत्य सनातन वैदिक धर्म" का संदेश, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का आदेश-उपदेश प्रचारित-प्रसारित करते रहते हैं। यहाँ के कुछ नगरों में विधिवत् आर्यसमाज स्थापित हैं, जिनमें देन हाग नगर का आर्यसमाज प्रमुख है।
कुछ वर्षों से सूरीनाम के "आर्य दिवाकर मंदिर" की ही तरह हॉलैण्ड में भी भव्य "आर्य मंदिर" निर्माण करने की योजना चल रही है तथा उसके लिये अनुकूल भूमि का भी चयन (क्रय) हो चुका है। सम्भवतः इसी २०१४ वर्ष में निर्माण कार्य भी आरम्भ हो जायेगा।

दिनाँक १५ जून २०१४ (रविवार) को समाज के साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग उपरान्त "कार्यकारिणी" का चुनाव हुआ जिस में श्री पंडित सूर्यप्रसाद जी बीरे प्रधान निर्वाचित हुये हैं जो कि सूरीनाम व हॉलैण्ड के समुदाय में सुप्रसिद्ध, वरिष्ठ-पंडित, बहुज्ञ, लेखक-प्रवक्ता एवं सुयोग्य आर्य-प्रचारक, विचारक - मनीषी हैं। आपने अपना पद ग्रहण करते ही सबको साथ लेकर आर्यधर्म की प्रगति-उन्नति हेतु द्विगुण-उत्साह "तीव्रता" से "वेदप्रचार", "यज्ञ-संस्कार" आदि गतिविधियों द्वारा देश के कोने-कोने में स्वामी दयानन्द का संदेश पहुचाने का संकल्प लिया, साथ ही इसी वर्ष एक भव्य मंदिर के निर्माण की "आधार-शिला" रखने की भी घोषणा की है।

पंडित सूर्यप्रसादजी बीरे की नई कार्यकारिणी निम्नतः है-

बायें से दाहिने : श्री धीरज बदलू, पं॰ रंधीर प्रतिमन, आचार्य ओम् प्रकाश सामवेदी, ग्लेदिस भरोस, पंडिता श्यामा गोबिन्द, श्रीमती मालती पूरन, पं॰ सूर्यप्रसाद बीरे (प्रधान), श्री देवानन्द हनुमान एवं श्री रोब्बी मक्का जी।

नवनिर्वाचित इस कार्यकारिणी की "प्रचार रूपरेखा" में निम्न लिखित बिन्दुओं का समावेश किया गया है।-

१॰ मंदिर निर्माण हेतु अपेक्षित धन की पूर्ति करना।
२॰ यज्ञानुष्ठान, वेदपारायण आदि कार्यक्रम निरन्तर जारी रखना।
३॰ योग साधन, उपासना, ध्यान-केन्द्र का शुभ आरम्भ।
४॰ आर्येतर समुदायों को भी गतिविधियों में सम्मिलित करना।
५॰ आर्यसमाज को एक आध्यात्मिक-केन्द्र के (सार्वभौमिक) स्वरूप में विकसित करना।
६॰ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" के उद्घोषों को सार्थक बनाना, करना।
७॰ "हिन्दी-संस्कृत" भाषा ज्ञान के साथ-साथ सम्पूर्ण "वैदिक-वाङ्मय" के अध्ययन-आध्यापन का केन्द्र विकसित-स्थापित करना।
८॰ आर्य-आचार-व्यवहार, वेशभूषा-खान-पान "यज्ञ-संस्कार" के प्रशिक्षण-आयोजनों द्वारा वैदिक-आर्य-संस्कृति का सम्पोषण करना।
९॰ बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा वृद्धजनों का संगठन/प्रशिक्षण।
१०॰ वेदादि शास्त्रों का अनुवाद तथा "हिन्दी पत्रिका" का प्रकाशन।

परम पिता परमात्मा हमारे सत्संकल्पों को पूर्ण करें।

ओ३म् शम्